

रविवार 21 जुलाई, 2019

विषय — जिंदगी

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 23 : 6

"निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ साथ बने रहोगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वस कर करूँगा
ाम"

उत्तरदायी अध्ययन: नीतिवचन 4 : 10, 21-23, 25-27

- 10 हे मेरे पुत्र, मेरी बातें सुन कर ग्रहण कर, तब तू बहुत वर्ष तक जीवित रहेगा ।
21 इन को अपनी आंखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर ।
22 क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं ।
23 सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है ।
25 तेरी आंखें साम्हने ही की ओर लगी रहें, और तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें ।
26 अपने पांव धरने के लिये मार्ग को समथर कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें ।
27 न तो दहिनी ओर मुढ़ना, और न बाईं ओर; अपने पांव को बुराई के मार्ग पर चलने से हटा ले ॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 104 : 24, 30, 31, 33, 34

- 24 हे यहोवा तेरे काम अनगिनित हैं! इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया है; पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है ।
30 फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं; और तू धरती को नया कर देता है ॥
31 यहोवा की महिमा सदा काल बनी रहे, यहोवा अपने कामों से आन्दित होवे!

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड किरिचयन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था । यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने किरिचयन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है ।

- 33 मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहूंगा; जब तक मैं बना रहूंगा तब तक अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा ।
34 मेरा ध्यान करना, उसको पिरय लगे, क्योंकि मैं तो यहोवा के कारण आनन्दित रहूंगा ।

2. भजन संहिता 36 : 9

- 9 क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे ॥

3. भजन संहिता 16 : 5-11

- 5 यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे का हिस्सा है; मेरे बाट को तू स्थिर रखता है ।
6 मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी, और मेरा भाग मनभावना है ॥
7 मैं यहोवा को धन्य कहता हूँ, क्योंकि उसने मुझे सम्मति दी है; वरन मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है ।
8 मैं ने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है: इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊंगा ॥
9 इस कारण मेरा हृदय आनन्दित और मेरी आत्मा मगन हुई; मेरा शरीर भी चैन से रहेगा ।
10 क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा ॥
11 तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है ॥

4. व्यवस्थाविवरण 11 : 26-28

- 26 सुनो, मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और शाप दोनों रख देता हूँ ।
27 अर्थात् यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की इन आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हें सुनाता हूँ मानो, तो तुम पर आशीष होगी,
28 और यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को नहीं मानोगे, और जिस मार्ग की आज्ञा मैं आज सुनाता हूँ उसे तजकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लोगे जिन्हें तुम नहीं जानते हो, तो तुम पर शाप पड़ेगा ।

5. सभोपदेशक 1: 12, 13 (से:)

- 12 मैं उपदेशक यरूशलेम में इस्राएल का राजा था ।
13 और मैं ने अपना मन लगाया कि जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है, उसका भेद बुद्धि से सोच सोचकर मालूम करूँ; यह बड़े दुःख का काम है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उस में लगे ।

6. सभोपदेशक 2 : 1, 5, 8-11

- 1 मैं ने अपने मन से कहा, चल, मैं तुझ को आनन्द के द्वारा जांचूंगा; इसलिये आनन्दित और मगन हो। परन्तु देखो, यह भी व्यर्थ है।
- 5 मैं ने अपने लिये बारियां और बाग लगावा लिए, और उन में भांति भांति के फलदाई वृक्ष लगाए।
- 8 मैं ने चान्दी और सोना और राजाओं और प्रान्तों के बहुमूल्य पदार्थों का भी संग्रह किया; मैं ने अपने लिये गवैयों और गानेवालियों को रखा, और बहुत सी कामिनियां भी, जिन से मनुष्य सुख पाते हैं, अपनी कर लीं॥
- 9 इस प्रकार मैं अपने से पहिले के सब यरूशलेमवासियों अधिक महान और धनाढ्य हो गया; तौभी मेरी बुद्धि ठिकाने रही।
- 10 और जितनी वस्तुओं के देखने की मैं ने लालसा की, उन सभों को देखने से मैं न रुका; मैं ने अपना मन किसी प्रकार का आनन्द भोगने से न रोका क्योंकि मेरा मन मेरे सब परिश्रम के कारण आनन्दित हुआ; और मेरे सब परिश्रम से मुझे यही भाग मिला।
- 11 तब मैं ने फिर से अपने हाथों के सब कामों को, और अपने सब परिश्रम को देखा, तो क्या देखा कि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है, और संसार में कोई लाभ नहीं॥

7. यशायाह 65: 13, 14, 16 (वह कौन)-19, 21-23

- 13 इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है, देखो, मेरे दास तो खाएंगे, पर तुम भूखे रहोगे; मेरे दास पीएंगे, पर तुम प्यासे रहोगे; मेरे दास आनन्द करेंगे, पर तुम लज्जित होगे;
- 14 देखो, मेरे दास हर्ष के मारे जयजयकार करेंगे, परन्तु तुम शोक से चिल्लाओगे और खेद के मारे हाय हाय, करोगे।
- 16 ... सारे देश में जो कोई अपने को धन्य कहेगा वह सच्चे परमेश्वर का नाम ले कर अपने को धन्य कहेगा, और जो कोई देश में शपथ खाए वह सच्चे परमेश्वर के नाम से शपथ खाएगा; क्योंकि पिछला कष्ट दूर हो गया और वह मेरी आंखों से छिप गया है॥
- 17 क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करने पर हूं, और पहिली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी।
- 18 इसलिये जो मैं उत्पन्न करने पर हूं, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा।
- 19 मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा; उस में फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा।
- 21 वे घर बनाकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे।
- 22 ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएं और दूसरा बसे; वा वे लगाएं, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे।
- 23 उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिये उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश ठहरेंगे, और उनके बाल-बच्चे उन से अलग न होंगे।

8. यूहन्ना 8 : 1, 2, 12 (कह रही है)

- 1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया ।
- 2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा ।
- 12 ...कहा, जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा ।

9. यूहन्ना 10 : 1, 2, 9, 10 (मैं), 27-29

- 1 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु और किसी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है ।
- 2 परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है ।
- 9 द्वार मैं हूँ: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा ।
- 10 चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है । मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं ।
- 27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं ।
- 28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा ।
- 29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता ।

10. रोमियो 8 : 1, 2, 5, 6

- 1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं ।
- 2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया ।
- 5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं ।
- 6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है ।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 471:31 (विज्ञान सिखाता है)-1 (से,)

विज्ञान मनुष्य को सिखाता है कि ईश्वर ही जीवन है,

2. 324:13 (यह)-18

रास्ता सीधा और संकीर्ण है, जो इस समझ की ओर ले जाता है कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है। यह मांस के साथ एक युद्ध है, जिसमें हमें पाप, बीमारी, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, या तो यहाँ या उसके बाद, - निश्चित रूप से इससे पहले कि हम आत्मा के लक्ष्य तक पहुँच सकें, या परमेश्वर में जीवन पा सकते हैं।

3. 325:24 (वह)-26

... वह, जो मांस के विश्वासों से भीख माँगता है और उनकी सेवा करता है, वह इस दुनिया में कभी हमारे प्रभु की दिव्य ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच सकता है।

4. 319:1-2, 5-9 (से ;)

इस भ्रम की स्थिति है कि जीवन में जीवन के साथ कोई संबंध नहीं है।

भौतिक आधार से किसी की जीवन-संभावनाओं की गणना करना, आध्यात्मिक कानून का उल्लंघन करना और मानवीय आशा को भ्रमित करना होगा। स्वास्थ्य और आध्यात्मिक समझ ईश्वर के दिव्य सिद्धांत में विश्वास रखने के बाद, सभी परिस्थितियों में मनुष्य को बनाए रखता है;

5. 190:14-31

मानव जन्म, वृद्धि, परिपक्वता, और क्षय के रूप में घास से वसंत के रूप में सुंदर हरे रंग के ब्लेड के साथ होते हैं, बाद में मुरझा जाते हैं और अपनी मूल शून्य पर लौट आते हैं। यह नश्वर लगने वाला लौकिक है; यह कभी भी अमर होने में विलीन नहीं होता है, लेकिन अंत में गायब हो जाता है, और अमर आदमी, आध्यात्मिक और शाश्वत, वास्तविक आदमी पाया जाता है।

इब्रानी बार्ड, नश्वर विचारों द्वारा बह गया, इस प्रकार मानव अस्तित्व पर दुःखद तनाव के साथ उसकी लीवर बह गई:

मनुष्य की आयु घास के समान होती है,
वह मैदान के फूल की नाई फूलता है,
जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता,
और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है।

जब मानव के हृदय में आशा अधिक बढ़ी, तो उसने गाया:

परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूंगा जब
मैं जानूंगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूंगा ॥

क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है;
तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे ॥

6. 191:8-23

एक सामग्री के रूप में, सैद्धांतिक जीवन-आधार को अस्तित्व की गलत धारणा के रूप में पाया जाता है, मनुष्य का आध्यात्मिक और दिव्य सिद्धांत मानव विचार पर आधारित होता है, और इसे "जहां युवा बच्चा था," की ओर ले जाता है - यहां तक कि एक नए जन्म के लिए भी पुराना विचार, जीवन के आध्यात्मिक बोध और जिसमें जीवन शामिल है। इस प्रकार पूरी पृथ्वी सत्य के प्रकाश के पंखों पर, तरुटि के अंधेरे का पीछा करते हुए बदल जाएगी।

मानव विचार को स्वयं को भौतिकता और बंधन से मुक्त करना होगा। इसे अब सिर, हृदय या फेफड़ों से नहीं पूछना चाहिए: जीवन के लिए मनुष्य की संभावनाएँ क्या हैं? मन असहाय नहीं है। अ-बुद्धि के समक्ष बुद्धिमत्ता मूक नहीं है।

अपनी मर्जी से, घास का एक ब्लेड तक नहीं फूटता है, न कि कली के भीतर एक स्प्रे होता है, न कि एक पत्ती अपनी उचित रूपरेखा को उजागर करती है, न कि एक फूल अपने गुच्छे वाले सेल से शुरू होता है।

7. 239:16-22, 29-32

अपनी प्रगति का पता लगाने के लिए, हमें सीखना चाहिए कि हमारे संबंध कहां रखे गए हैं और जिन्हें हम स्वीकार करते हैं और भगवान के रूप में मानते हैं। यदि ईश्वरीय प्रेम हमारे निकट, पिरय, और अधिक वास्तविक होता जा रहा है, तो यह बात आत्मा को सौंप रही है। जिन वस्तुओं का हम पीछा करते हैं और जो आत्मा हम प्रकट करते हैं वह हमारे दृष्टिकोण को प्रकट करती है, और दिखाती है कि हम क्या जीत रहे हैं।

परफेक्ट माइंड आगे की पूर्णता भेजता है, क्योंकि गॉड इज माइंड। नश्वर मन अपने स्वयं के सदृशों को भेजता है, जिनमें से बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा, "सभी गुमान है।"

8. 272:19-27

यह भौतिक जीवन के भयावह रूप से परिणाम के विपरीत, दैनिक जीवन के विचार और ईसाईकरण का आध्यात्मिकीकरण है; यह शुद्धता और पवित्रता, कामुकता और अशुद्धता के नीचे की ओर झुकाव और सांसारिक गुरुत्वाकर्षण के विपरीत है, जो वास्तव में क्राइस्टियन साइंस के दिव्य उत्पत्ति और संचालन को प्रमाणित करता है। क्राइस्टियन साइंस की जीत तरुटि और बुराई के विनाश में दर्ज की जाती है, जिसमें से पाप, बीमारी और मृत्यु की निराशाजनक मान्यताओं का प्रचार किया जाता है।

9. 265:23-5

किसने महसूस किया है कि मानवीय शांति का नुकसान आध्यात्मिकता के लिए मजबूत इच्छाओं को प्राप्त नहीं हुआ है? स्वर्गीय भलाई के बाद की आकांक्षा इससे पहले कि हमें पता चले कि ज्ञान और प्रेम का क्या संबंध है। सांसारिक आशाओं और सुखों का नुकसान कई दिलों के आरोही मार्ग को उज्ज्वल करता है। भावना के दर्द हमें जल्दी से सूचित करते हैं कि भावना के सुख नश्वर हैं और यह आनंद आध्यात्मिक है।

अर्थ की वेदनाएँ नमस्कार हैं, यदि वे झूठे सुखदायक विश्वासों को मिटा देते हैं और भावनाओं को आत्मा से आत्मा तक पहुँचाते हैं, जहाँ ईश्वर की रचनाएँ अच्छी हैं, "हृदय को आनन्दित करता है।" यह विज्ञान की तलवार है, जिसके साथ सत्य तरुटि को नष्ट करता है, भौतिकता मनुष्य के उच्च व्यक्तित्व और भाग्य को स्थान देती है।

10. 262:17-26

अय्यूब ने कहा: "मैं कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आंखें तुझे देखती हैं;" पुरुष अय्यूब के विचार को प्रतिध्वनित करेंगे, जब पदार्थ का दर्द और सुख पूर्वसूचक होना बंद हो जाएगा।

वे फिर जीवन और खुशी, खुशी और दुःख के झूठे अनुमान को छोड़ देंगे, और प्रेमपूर्वक आनंद प्राप्त करने, धैर्य से काम लेने और ईश्वर के विपरीत सभी को जीतने का आनंद प्राप्त करेंगे। एक उच्च दृष्टिकोण से शुरू, कोई अनायास उठता है, यहां तक कि प्रकाश बिना प्रयास के प्रकाश का उत्सर्जन करता है; इसलिये "क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।"

11. 264:13-20, 24-31

जैसा कि नश्वर भगवान और मनुष्य के बारे में अधिक सही दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं, सृष्टि की बहुपक्षीय वस्तुएं, जो पहले अदृश्य थीं, दृश्यमान हो जाएंगी। जब हम महसूस करते हैं कि जीवन आत्मा है, तो कभी भी नहीं, न ही इस

मामले में, यह समझ आत्म-पूर्णता में विस्तारित होगी, सभी को ईश्वर में मिल जाएगी, अच्छा होगा, और किसी अन्य चेतना की आवश्यकता नहीं होगी।

आत्मा और उसके स्वरूप ही होने का एकमात्र यथार्थ हैं। ... आध्यात्मिक जीवन और धन्यता ही एकमात्र साक्ष्य हैं, जिनके द्वारा हम वास्तविक अस्तित्व को पहचान सकते हैं और अकथनीय शांति को महसूस कर सकते हैं जो एक सर्व-आत्मिक प्रेम से आती है।

जब हम क्रिश्चियन साइंस में रास्ता सीखते हैं और मनुष्य के आध्यात्मिक होने को पहचानते हैं, तो हम भगवान की रचना को समझेंगे और समझेंगे, - पृथ्वी और स्वर्ग और मनुष्य की सभी महिमा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6